॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ८ नवम्बर २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ | अंक - ८, नवम्बर | २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	वर्ण व्यवस्था-जैन धर्म तथा हिन्दू धर्म के सन्दर्भ में	डॉ. दीपंजय श्रीवास्तव	४५७
२.	गोपाचल तीर्थ सिद्ध क्षेत्र-श्रद्धा और प्रेम का प्रतीक	रामजीत जैन	४६३
३.	वैर का विपाक		४७३

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

वर्णव्यवस्था

जैनधर्म तथा हिन्दू धर्म के सन्दर्भ में

डा. दीपंजय श्रीवास्तव

विश्व के धर्मों में जैन एवं हिन्दू धर्म का विशिष्ट स्थान है। इनकी प्राचीनता का आकलन संभव नहीं है। एक का उद्‌गम अनादि अपौरूषेय वेद से है और दूसरा अनादितः अस्तित्व में है। वैदिक वाङ्मय में तीर्थकरों के नामोल्लेख से जैन धर्म की प्राचीनता प्रमाणित होती है। दोनों भारत के सनातन तथा जीवन्त धर्म है और दोनों में देश काल की इयत्ता के अतिक्रमण का सामर्थ्य है। निश्चयतः वह दिन दूर नहीं है जब युद्ध की विभीषिका से भयभीत विश्व का प्रत्येक मानव वास्तविक सुख और शान्ति के लिए इन धर्मों का स्वेच्छापूर्वक वरण करेगा।

'**वर्णव्यवस्था**' प्राचीन भारत में स्थापित उन शाश्वत मूल्यों में से एक है जिनकी स्थापना भौतिकी और आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए की गयी थी। प्राचीन भारत में वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में चार वर्णो का विभाजन किया गया था। जिसका आधार समाज में व्याप्त सहयोग सामंजस्य और सहकारिता की भावना थी।

व्यत्पत्ति की दृष्टि से 'वर्ण' शब्द 'वृज वरणे' या 'वरी' धातु से बना है जिसका अर्थ है वरण करना अथवा चुनना। अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य जिस व्यवसाय का वरण करता है वही उसका वर्ण होता है। अतः वर्ण का जाति से कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं होता। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार भागों के पीछे मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि ज्ञान, सुरक्षा, आजीविका,तथा सेवा मनुष्य की चार स्वाभाविक इच्छाओं की तुष्टि करते हैं। इस दृष्टि से जो पठन पाठन का कार्य करते है वे ब्राह्मण, जो रक्षा का कार्य करते है वे क्षत्रिय, जो व्यवसाय में रुचि लेते है वे वैश्य, तथा जिनकी सेवा कार्य में विशेष अभिरुचि है वे शूद्र कहलाते हैं। वर्ण का यही

वास्तविक अर्थ है। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में चार वर्णों का वर्णन इस प्रकार आया है– विराट पुरुष (परमेश्वर) के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघों से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई है।[१] इससे हमें पता चलता है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र नामक चार वर्णों की उत्पत्ति विराट पुरुष (परमेश्वर) से हुई है। भगवद्गीता में भी श्रीकृष्ण ने बतलाया है कि गुण और कर्म के अनुसार चारों वर्णों की उत्पत्ति भगवान से हुई है।[२] महाभारत में कहा गया है कि इन चार वर्णों के स्वभाव और कर्म भिन्न-भिन्न है।[३]

भृगु–संहिता के अनुसार ब्रह्मा ने सर्वप्रथम केवल ब्राह्मणों की ही सृष्टि की थी। पर आगे चलकर मानव जाति उनके रंगों के अनुसार चार वर्णों में विकसित हो गये। ब्राह्मणों का रंग सफेद, क्षत्रियों का लाल, वैश्यों का पीला तथा शूद्रों का रंग काला था। किन्तु आगे चलकर स्वयं भृगुमुनि को स्वीकार करना पड़ा कि रंग के आधार पर वर्णों का वैज्ञानिक विभाजन नहीं किया जा सकता। वर्णों के विभाजन का वास्तविक आधार तो कर्म है। जो सत्त्व गुण प्रधान थे वे ब्राह्मण कहलाये, जो रजोगुण प्रधान थे वे क्षत्रिय हुए, जो तमों गुण मिश्रित रजः प्रधान व्यक्ति थे वे वैश्य कहलाये तथा जो तमोगुण प्रधान थे उन्हें शूद्र के नाम से अभिहित किया गया।

यद्यपि हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था को माना गया है फिर भी इसे कट्टरता के साथ नहीं माना गया है। विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति तथा समूह अपनी सामाजिक जाति या वर्ण को बदल सकते हैं। विश्वामित्र, पुरामिध और अजामिध ब्राह्मण जाति के अन्तर्गत माने गये और उन्होंने वैदिक मंत्रों की भी रचना की। राजा जनक जन्म से क्षत्रिय होते हुए भी अपनी परिपक्क विद्वता तथा पवित्र चरित्र के कारण ब्राह्मण माने गये। शूद्र होते हुए भी व्यक्ति अच्छा कार्य करने पर ब्राह्मण हो सकता है।[४]

१. ब्राह्मण : ब्राह्मण का मुख्य धर्म वेदाध्ययन करना और कराना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और देना है।[५] **निरूक्त तथा मनुस्मृति** में कहा गया है कि विद्या ब्राह्मणों के पास आयी और सम्पत्ति के समान अपनी रक्षा करने के लिये ब्राह्मणों से प्रार्थनों की।[६] महाभारत के अनुसार सत्य, दान, क्षमा, शील, मृदुता, तप और दया आदि ब्राह्मण के लक्षण माने गये है।[७] आर्थिक क्षेत्र में विशेषाधिकार के अन्तर्गत ब्राह्मण को दान लेने का

अधिकार था। यज्ञ की बची सामग्री ब्राह्मण की ही होती थी। उसके धन को राजा भी ग्रहण नहीं कर सकता था। वह राजकर से मुक्त था।[८] ब्राह्मण को प्रत्येक वर्ण में विवाह करने का अधिकार था। चार पत्नियाँ रखना उसकी स्थिति, गरिमा और प्रतिष्ठा को व्यक्त करता है।[९]

२. क्षत्रिय : क्षत्रिय के प्रमुख कार्य प्रजा की रक्षा करना दान देना, यज्ञ कराना, नृत्य, भोगानन्द आदि से आसक्ति रखना था। ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय का स्थान माना गया है। ऋग्वेद में क्षत्रिय को राजन्य कहा गया है। इन्हें राज्य की भुजाएं कहा जाता था। वे अध्यापन तथा अध्ययन भी कर सकते थे, परन्तु उनका कार्य चतुवर्णों की रक्षा करना था। आचार्य गौतम ने इस वर्ण को तीन वेदों पर अधीन बताया है।[१०] कौटिल्य के अर्थशास्त्र में क्षत्रिय के प्रमुख कर्मों में अध्ययन, यज्ञ करना, शस्त्रधारण करना और भूरक्षण की गणना की है।[११] क्षत्रियों का कार्य न्याय की स्थापना करना तथा दण्ड देना भी था।

३. वैश्य : वैश्य की गणना द्विजाति में की गयी है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य इन तीन वर्णों को द्विज कहा गया है। द्विज के लिये यज्ञ करना, वेदाध्ययन करना एवं दान देना कर्तव्य माना गया है।[१२] वैश्यों का प्रमुख कार्य अर्थ व्यवस्था से सम्बन्धित था तथा अन्य वर्णों का भरण-पोषण करना था। वे कृषि कर्म, पशुपालन, व्यापार, उद्योग धन्धे तथा दान आदि में निपुण थे।[१३] अपनी उत्पादित आय का कुछ भाग उन्हें कर के रूप में देना पड़ता था। आपात काल में वह अन्य वर्णों के व्यवसाय को अपना सकता था। गाय, ब्राह्मण तथा अपने वर्ण की रक्षा के लिये वह शस्त्र भी धारण कर सकता था।[१४]

४. शूद्र : शूद्र वर्ण का एक ही काम था कि वह द्विज वर्णों की सेवा करे।[१५] महाभारत में भी कहा गया है कि शूद्र की उत्पत्ति भगवान ने सभी की सेवा के लिए की है।[१६] परन्तु याज्ञवल्क्य ने बतलाया है कि शूद्र केवल सेवा पर ही निर्भर नहीं थे। अपनी जीविका के लिये शूद्र बढ़ई, चित्रकार पच्चीकार, रंगसाज, नृत्य गायन, वादन आदि का भी कार्य करते थे।[१७]

जैनधर्म जन्मना वर्ण व्यवस्था को नहीं मानता है। **पद्मचरित** में कहा गया है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र रूप में जाति के जो चार भेद कहे गये है अहेतुक है। यदि कहा जाय कि वेदवाक्य और अग्नि के संस्कार से दूसरा जन्म होता है, यह भी ठीक नहीं है। इसके लिए युक्ति यह है कि जहां जहां

जाति भेद देखा जाता है, वहां वहां शरीर की विशेषता अवश्य पाई जाती है।[१८] जिस प्रकार कि मनुष्य, हाथी, गधा, घोड़ा आदि में पायी जाती है।[१९] इसके अतिरिक्त अन्य जातीय पुरुष के द्वारा अन्य आतीय स्त्री में गर्भोत्पत्ति देखी जाती है। इससे सिद्ध है कि ब्राह्मणादि में जाति वैचित्रय नहीं है। कोई जाति निन्दनीय नहीं है, गुण ही कल्याण करने वाले है। यही कारण है कि व्रत धारण करने वाले चाण्डाल को भी गणधरादि देव ब्राह्मण कहते है।[२०] विद्या और विनय से सम्पन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल के विषय में पण्डित जन समदर्शी होते है।[२१] पद्मचरित में बतलाया गया है कि 'नामधारी ब्राह्मण' जो सब प्रकार के आरम्भ में प्रवृत्त है, निरन्तर कुशील में लीन रहते है तथा क्रियाशील है वे केवल ब्राह्मण नामधारी ही है, वास्तविक ब्राह्मणत्व उनमें कुछ भी नहीं है।[२२]

जैन धर्म एक मनुष्य जाति को ही मानता है। जैन धर्म के अनुसार जातियों के भेद की कल्पना केवल आचार की विशेषता से ही की गयी है। ब्राह्मणों की प्रशंसनीय जाति कही भी नियत नहीं है, किन्तु जप-तप पूजन-पाठ एवं अध्ययन अध्यापन आदि रूप समीचीन आचरण से ही प्राप्त होते है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों ही वर्णमालों की जाति वस्तुतः एक ही मनुष्य जाति है। उसके भीतर यदि विभाग किया जाता है तो वह विविध प्रकार से ही किया जाता है। यदि उक्त चारों वर्ण वालों के मध्य स्वभावतः जाति भेद होता है तो फिर ब्राह्मणी से क्षत्रिय की उत्पत्ति किसी प्रकार से भी नहीं होनी चाहिए थी। कारण कि मैंने शील जाति में क्रोध की उत्पत्ति कभी नहीं देखी है।

यदि यहाँ उत्तर दिया जाये कि शुद्ध शील वाली ब्राह्मण स्त्री में पवित्र आचार के धारक ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न किया गया हो, वह ब्राह्मण कहा जाता है, तो यह उत्तर भी ठीक नहीं है, क्योंकि ब्राह्मण और ब्राह्मणेत्तर में सर्वकाल शुद्धशीलपन स्थित नहीं रह सकता है। इसका भी कारण यह है कि अनादि काल से आने वाले कुल में उस शुद्ध शीलता से पतन कहाँ नहीं होता है? कभी न कभी उस शुद्ध शीलता का विनाश होता ही है।

जैन धर्म के अनुसार शुद्र भी धर्मपालन का अधिकारी है।

शूद्रो ऽप्युपस्कराचारवपुः शुद्धास्तु तादृशः।
जात्या हीनोऽपि कालादिलब्धौ ध्यात्माऽस्ति धर्मभाक्।।

उपकरण आचार और शरीर की पवित्रता से युक्त भी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान जिन धर्म सुनने का अधिकारी है। जाति से हीन भी आत्मा, काल आदि लब्धि के आने पर धर्म का अधिकारी होता है।

जबकि इसके विपरीत मनुस्मृति में कहा गया है कि—

न शूद्राय मतिदंधान्नोच्छिष्टं न हविष्कृतम्।
न चास्योपदिशेद्धर्म न चास्य व्रतमादिशेत।।[२३]

अर्थात् शूद्र के लिए बुद्धि नहीं देने चाहिए, न जूठन और न हवि का शेष भाग ही देना चाहिए। इसको न धर्म का उपदेश देना चाहिए और व्रत का उपदेश देना चाहिए। पुनः "जो इस (शूद्र) को धर्म का कथन करता हैं अथवा व्रत का उपदेश देता है, वह उसी के साथ असंवृत नामक नरक में डूब जाता है।"[२४]

जैन धर्म के अनुसार जिस जाति में संयम, शील, तप, दान, इन्द्रियां व कषायों का दमन और दया ये प्रमार्थभूत गुण अवस्थित रहते है, वही सत्पुरुषों की श्रेष्ठ जाति समझी जाती हैं। योजनागंधा, धीवरकन्या आदि से उत्पन्न होकर तपश्चरण में रत हुए व्यासादिको की जाने वाली उत्तम पूजा को देखकर तपश्चरण में अपनी बुद्धि लगाना चाहिए।

शीलवान् मनुष्य नीच जाति में उत्पन्न होकर भी स्वर्ग को प्राप्त हुए है तथा उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भी कितने ही मनुष्य शील व संयम को नष्ट करने के कारण नरक को प्राप्त हुए है। सज्जनों को केवल शील संयम आदि गुणों से रहित जाति का अभिमान नहीं करना चाहिए। क्योंकि वह कोरा अभिमान नीच गति में प्रवेश करने वाला है, किन्तु इसके विपरीत उन्हें शील का अतिशय आदर करना चाहिए क्योंकि वह उच्च पद को प्राप्त करने वाला है।[२५]

क्योंकि मानव के उत्तम गुणों के द्वारा उत्तम जाति प्राप्त होती है, और उन गुणों के नष्ट होने पर वह विनाश को प्राप्त होती है, अतः विद्वानों को गुणों के विषय में उत्कृष्ट आदर करना चाहिये।

सन्दर्भ

१. ब्राह्मणों अस्य मुखमासीत.................... शूद्रो अजायत ।। ऋग्वेद १०/९०/१२
२. चातुवर्णव्यमया सृष्टिं.............विद्वयकर्ता रभ व्ययम् ।। गीता– ४/१३
३. ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यानांशूद्रानां........... स्वभाव प्रभवैःगुणैः। महाभारत भीष्मपर्व ४१/४२
४. रीलिजन एण्ड सोसाइटी — डा. एस. राधाकृष्णन् पेज १३
५. कौटिल्य अर्थशास्त्र ११३, याज्ञवालक्य ५/१८८
६. विद्या ब्राह्मण मित्याहु : .... स्यां वीर्यक्तमा।। मनुस्मृति २/११४
७. सत्यं दानं क्षमाशीलं आनृशंस्यं............ब्राह्मण इति स्मृतिः। महाभारत, वनपर्व १८०/२१
८. कौटिल्य अर्थशास्त्र २/१, मनुस्मृति ७/१३३
९. अथर्ववेद ५/१७/८.१
१०. गौतम धर्म सूत्र– १३/३, ११/९
११. कौटिल्य अर्थशास्त्र ३/६
१२. इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च। — याज्ञवल्क्य स्मृति–१/११८
१३. गौतम धर्मसूत्र–१०/१–३
१४. बोधायन धर्मसूत्र—२/२२०
१५. एकमेव तु शूडस्य प्रभुः—वर्णानां शुषामनसूयया ।। मनुस्मृति–१/९१
१६. प्रजापतिहि वर्णाना दासं शूद्र मकल्पयत्। —महाभारत।
१७. शूद्रस्व्य द्विजशुश्रुषा..........जाति हित माचरन्। याज्ञवल्क्य- १/१२०
१८. पद्म चरित–११/१९४-९५
१९. पद्मचरित–११/१९६
२०. पद्म चरित– ११/२०३
२१. पद्म चरित–११/२०४
२२. वही–१०९/८२
२३. मनुस्मृति–४/८०
२४. मनुस्मृति– ४/८१
२५. अमितगति : धर्म परीक्षा–१७/२४-३३

गोपाचल तीर्थ सिद्धक्षेत्र

श्रद्धा और प्रेम का प्रतीक

रामजीत जैन

वर्तमान में ग्वालियर नाम का सम्बन्ध 'गालव ऋषि' की पुण्य-भूमि से लगाया जाता है जो केवल एक भ्रम है। वास्तव में गालव ऋषि का ग्वालियर से कभी दूर का भी सम्बन्ध नहीं रहा।[1]

महाभारत से पूर्व ग्वालियर नगर और क्षेत्र का प्राचीनतम नाम गोपराष्ट्र मिलता है। पहले यह गोपराष्ट्र चेदि जनपद के अंतर्गत था। कालान्तर में यह स्वतंत्र जनपद हो गया। उस समय जनपद शब्द का अर्थ राष्ट्र के रूप में प्रयोग होने लगा। इसके चारों ओर भादानक, सूरसेन, चेदि, निषध, तोमर आदि राष्ट्र हो गये। ग्वालियर का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख मार्कण्डेय पुराण में गोवर्धनपुरम्, मानसिंह तोमर (१४८९-१५१५ ई.) के शिला लेख में गोवर्धनगिरी, सन् ५२५ ई. के मातृचेट शिलालेख में 'गोपाह्वय' के नाम से मिलता है।

ग्वालियर के लिये प्रेम और श्रद्धा के वशीभूत होकर अनेक नामों एवं विशेषणों का प्रयोग किया जाता रहा। मिहिरकुल के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष (सन् ५२७ ई.) में यहाँ के गढ़ को 'गोप भूधर', दशवीं शताब्दी में गुर्जर प्रतिहारों के शिलालेख में 'गोपाद्रि', तथा 'गोपागिरी', रत्नपाल कच्छपघात के लगभग ११९५ ई. के शिलालेख में 'गोपक्षेत्र', विक्रम सम्वत् ११५० के शिलालेख में 'गोपाद्रि' तथा अनेक शिलालेखों में 'गोपाचल', 'गोपशैल' तथा 'गोप पर्वत', वि. सं. ११६१ के शिलालेख में 'गोपालकेरि', 'ग्वालियर खेड़ा' कहा गया है।

अपभ्रंश भाषा में कवियों ने इस दुर्ग को गोपालगिरि, गोपगिरी, गोव्वागिरि कहा है।[2] हिन्दी में सबसे पहले सन् १४८९ ई. में कवि मानिक ने ग्वालियर

---

१. साप्ताहिक गोपाचल हेरल्ड, १५ जून १९८५ लेख डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी।

२. देखिये रइधु ग्रन्थावली-सम्पादक डॉ. राजाराम जैन (पासणाह चरिउ)

संज्ञा का प्रयोग किया है। तुर्क इतिहासकारों ने 'गालेवार' या 'गालियूर' लिखा है। मराठी भाषा में ग्वाल्हेर कहते है। काश्मीर के सुल्तान जैतूल आवेदीन के राज कवि जीवराज ने गोपालपुर के नाम से सम्बोधित किया है। इस नाम माला की विशेषता यह है कि इसके सभी मनकों में गोपाचल गढ़ को केन्द्र माना गया है। ग्वालियर नगर और ग्वालियर क्षेत्र उसी के अंग है।

भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति ने संवत् १७४० में रचित रविव्रत कथा में ग्वालियर को गढ़ गोपाचल लिखा है—

'गढ़ गोपाचल नर भलो शुभ थानों,'

साथ ही अनेक जैन ग्रन्थ प्रशस्तियों एवं जैन प्रतिमा प्रशस्तियों में गोपाचल दुर्ग, गोपाद्रों, गोयल गढ़, गोपाचल आदि नामों का अधिकतम उल्लेख मिलता। गोपाचल का सुन्दर एवं सजीव वर्णन विक्रम की १५वीं शताब्दी के अपभ्रंश भाषा के महाकवि रद्घू ने पासणाह चरिउ में किया है जिसका हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया गया है।

जहाँ पांडुर एवं सुवर्ण वाली अनेक पताकाओं से युक्त जिन मन्दिर निरंतर शोभायमान रहते हैं, जहाँ के तोरणों एवं अट्टालिकाओं से सुशोभित हर्म्य मन को ऐसे सुख प्रदान करते हैं, जैसे (व्यक्ति के) सत्कर्म। जहाँ चारों ओर बाजार, चौक, एवं सुन्दर सुन्दर स्थल है, जहाँ वणिक श्रेष्ठ पदार्थों का व्यापार करते हैं, जहाँ रास्तों में (चलने के लिये) स्थान नहीं मिलता, सर्वत्र कोलाहल व्याप्त रहता है, जहाँ लोग सभी प्रकार के अर्थों से परिपूर्ण होकर निवास करते हैं, जहाँ दुकानों में विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ भरी रहती है, कसौटियों पर (जहाँ) भौम्य खंडों (स्वर्ण, रत्नादिक खनिजों) को कसा जाता है, जहाँ पर निरन्तर अर्चना, पूजा एवं दान से सुशोभित, निर्मल बुद्धि सम्पन्न महाजन निवास करते हैं, यहाँ उत्तम चतुर्वर्ण के लोग पुष्प से प्रकाशित (प्राप्त) दिव्य भोगों को भोगते हुए विचरण करते है, जो व्यापार में पारंगत हैं तथा सभी जन सम्पन्न हैं। जहाँ के सभी भव्य जन सप्त व्यसनों तथा भय से विहीन हैं। सोने के कड़ों से विशेष रूप से मण्डित, सभी प्रकार के श्रृंगार किये हुए, सौभाग्य की निधान, जैन धर्म एवं शील गुण से युक्त जहाँ की मानिनी नारियाँ मानपूर्वक श्रेष्ठ लीलाऐं किया करती हैं। जहाँ

लुटेरे, कपटी, चोर, दुष्ट, दुर्जन, क्षुद्र, खल, पिशुन, धृष्ट, दुःखी एवं अनाथ जन दिखाई नहीं पड़ते हैं। सभी जन प्रेमासक्त एवं निपुण हैं, जहाँ घोड़ों के खुरों से दलित हुए मार्ग सुशोभित रहते हैं और जहाँ का धरातल पान के रंग में रंगा हुआ रहता है, जहाँ पर स्वच्छ एवं गहरी स्वर्ण रेखा नाम की नदी शोभायमान रहती है, जो अगाध है तथा जो ऐसी प्रतीत होती है मानों धरा का आलिंगन कर रही है। वह स्वर्ण रेखा नदी समुद्र की ओर जाती हुई ऐसी प्रतीत होती है, मानों स्वर्ण की रेखा ही हो और मानों वह तोमर राजा के पुण्य से ही यहाँ आई हो। उस नदी से गोपाचल उसी प्रकार सुशोभित होता है जिस प्रकार भार्या से सुशोभित कोई दक्ष पति।

सुख, समृद्धि एवं यश के लिए यह (गोपाचल) रत्नाकर के समान आकर था, बुध जनों के समूहों से युक्त वह नगर मानों इन्द्रपुरी ही था। शास्त्रार्थों से सुशोभित तथा जनमन को आकर्षित करने वाले सर्वश्रेष्ठ नगरों का यह गुरू ही था। ।।३।।

पं. छोटेलाल वरैया ने 'ग्वालियर का अतीत' नामक काव्य पुस्तक में भी ग्वालियर दुर्ग का बहुत अच्छा विवरण दिया है। जिसकी भूमिका कामता प्रसाद अलीगंज (एटा) ने लिखी है।[३]

गोपाचल आख्यान :

गोपाचल गढ़ के इतिहास-लेखन के प्रति आकर्षण के अनेक कारण हैं, उनमें सबसे प्रमुख कारण है इसकी-भौगोलिक स्थिति और आकार।[४]

गोपाचल की भौगोलिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। उत्तर भारत से दक्षिण की ओर जाने वाले मार्ग में यह उत्त्तुंग प्रहरी के समान स्थित है। गोपाचल गढ़ पर वर्चस्व स्थापित किये बिना किसी भी दक्षिणी शक्ति का उत्तर भारत का अभियान अथवा उत्तर भारत की शक्ति का दक्षिण की ओर अभियान निरापद नहीं माना जाता था। उत्तर भारत से दक्षिण की ओर जाने वाले तथा दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वालों (जनों) को गोपाचल जाना आना पड़ता था।

---

३. देखिये-ग्वालियर का अतीत छोटेलाल वरैया

४. गोपाचल आख्यान-सम्पादक डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी

गोपाचल देश का प्रमुख मार्ग था। पाटलीपुत्र, मथुरा आदि क्षेत्रों से होता हुआ कभीं यह (प्रमुख) मार्ग (महापथ) ऐषाह के पास चम्बल को पार करता हुआ प्राचीन कान्तिपुरी (वर्तमान कुतवार-ग्वालियर मुरैना के मध्य) पहुँचता था। फिर गोपगिरि से प्राचीन नगरी पद्मावती (वर्तमान पवाया) पहुँचकर दतिया होता हुआ मधुवन और तुम्बबन होकर विदिशा की ओर बढ़ता था, फिर आगे नर्मदा पार करता हुआ गुजरात एवं काठियावाड़ के पोत-पत्तनों की ओर जाता था। दूसरी ओर तक्षशिला, लवपुर (लाहौर) से एक महा भार्ग मथुरा को पारकर पूर्व में पाटिलिपुत्र की ओर जाता था तथा दूसरा गोपगिरि होता हुआ नर्मदा की ओर बढ़ता था। इस प्रकार गोपाचल इन सभी महा मार्गों की कड़ियों को जोड़ता था। इन महा मार्गों से सैनिक व्यापारी, संत और विद्वान समस्त भारत में भ्रमण करते थे।

यह गढ़ एक विशाल पर्वत श्रेणी पर स्थित है जिसकी ऊँचाई उत्तर की ओर ३०० फुट और दक्षिण की ओर २७४ फुट है। यह गढ़ ९२४० फुट (पौने दो मील) लम्बा है। इसकी चौड़ाई ६०० फुट से २८०० फुट तक है।

अब तक की प्राप्त जानकारी से पता चलता है कि ईसा की तीसरी शताब्दी के पूर्व से गोपाचल की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा था। मातृचेट (५२५ ई.) ने अपने शिला लेख में गोपाचल के विषय में लिखा- – "नाना धातु विचित्रे गोपाह्रय नम्नि भूधरे रम्य" (अर्थात् गोपचलका भूधर जिसपर विभिन्न धातुऐं मिलती हैं) गोपाचल पर अब तक उपलब्ध यह प्राचीनतम शिलालेख है, यद्यपि यहाँ दूसरी और तीसरी शताब्दी तक की प्रतिमा बिखरी पड़ी हैं। धीरे-धीरे गोपाचल की ख्याति बढ़ती गयी। वि. सं. १०११ के धंग के शिलालेख में गोपाचल को 'विस्मैक-निलय' लिखा है। इससे ज्ञात होता है कि धंग चन्देल के समय तक गोपाचल पर अनेक भव्य प्रासाद, वापी, तड़ाग आदि का निर्माण हो चुका था और यात्रियों के लिए वह 'विस्मियों का निलय' बन चुका था। इस सब भौतिक आकर्षणों के अतिरिक्त गोपाचल गढ़ के इतिहास में अनेक रोमांचकारी घटनायें भी गुम्फित हो गई थी। इन्हीं कारणों से गोपाचल के विषय में हिन्दी तथा फारसी के इतिहासकारों ने अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक ग्रन्थ लिखे।

गोपाचल गढ़ को जैन धर्म का गढ़ या तीर्थ कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। जैन प्रतिमाओं का तो यह विपुल भण्डार है। रइधू ने "अगणित अण पडिम को लक्खई" में यहाँ की जैन मूर्तियों को अगणित कहा है। उनमें से अधिकांश मूर्तियों की प्रतिष्ठा उन्हीं के द्वारा हुई थी। यहाँ वर्तमान में उपलब्ध जैन मूर्तियों की संख्या १५०० के लगभग है जो ६ इंच से लेकर ५७ फुट तक की है। यहाँ की सबसे विशाल मूर्ति भगवान आदिनाथ की है जो बावनगजा के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान पार्श्वनाथ की विशालतम पद्मासन मूर्ति विश्व में अद्वितीय है।

इसके अलावा किले में चार हिन्दू और दो मुस्लिम इमारतें भी उल्लेखनीय हैं—मान मन्दिर, गूजरी महल, करण मन्दिर, विक्रम मन्दिर, जहांगीर महल और कुछ महत्वपूर्ण हिन्दू मंदिर, सूर्य मन्दिर, चतुर्भुज, जयंती थोरा, मातादेवी, धौन्धदेव और महादेव दर्शनीय है तथा एक गुरुद्वारा भी है जो दाता बन्दी छोड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार गोपाचल इतिहास, राजनीति, कला सौन्दर्य के साथ एक तीर्थ स्थल भी हैं।

कोई नहीं जानता कि ग्वालियर का गोपाचल दुर्ग कब बना इसके निर्माणकाल का कोई प्रामाणिक साक्ष्य नहीं है। कामता प्रसाद जैन के शब्दों में—ग्वालियर का दुर्ग आज का नहीं, कल का नहीं, वह तो मानव की अतीत वृत्ति का क्षेत्र होने के नाते उतना ही पुराना है जितना कि आकाश और काल। हाँ, काल चक्र की फरन से, इतिहास ने उसके नाना रूप देखे हैं।[१]

इतिहास जैनागम विषै, इस दुर्ग को सम्मान से।
देखा गया अति प्रेम से, प्राचीनतम युग काल से।

(ग्वालियर का अतीत)

गोपाचल दुर्ग की प्राचीनता के संबंध में आख्यान भी मिलते हैं[२] :—

पुण्य नक्षत्र जोग शुभ लियो। तेरस सकल ठाठ विधि कियो।।
तिहि विधि सकल वेद विधि ठई। तवै नींव गोपाचल दई।।

---

१. छोटेलाल वरैया रचित ग्वालियर का अतीत की भूमिका ३/१२/५८

२. सम्पादक डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी—गोपाचल आख्यान

द्वापर अंत जु कलिजुग आदि। संवत् धरयो महूरत साधि।।
धर्म जुधिष्ठित संवत् लहयौ। आदि ग्रन्थ में ते मैं कहयौ।।

(खड़गराय)

द्वापर के द्वय मास रहे, पुनि प्रवेश कलि काल।
सो संवत् मिति जानियो, गढ़ की नींव भुवाल।।

(नाना कवि)

कुछ इतिहासकार इसे ईसा से ३००० (तीन हजार) वर्ष पूर्व में, तो कुछ पुरातत्वेत्ता इसे ईसा की तीसरी शताब्दी में निर्मित मानते हैं।[३] इन तथ्यों से यह स्पष्ट है कि गोपाचल दुर्ग की प्राचीनता के बारे में इतिहास मौन है। प्राप्त जानकारी से केवल यह ज्ञात होता है कि ईसा की छठवीं शताब्दी में इस दुर्ग का अस्तित्व था। सन् ५२० ई. में, अर्थात् मिहिर कुल हूण के राज्य के पन्द्रहवे वर्ष में मातृचेट ने गोपागिर पर सूर्य मन्दिर बनवाया था। मातृचेट के शिलालेख में गोपाद्रि का वर्णन संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है—

गोप नाम का भूधर जिस पर विभिन्न धातुऐं प्राप्त होती हैं।

इससे अनुमान लगा सकते है कि इन धातुओं को प्राप्त करने के लिये मानव श्रम आवश्यक रहा होगा, और आसपास मानव निवास हो गया होगा। कुछ साधु सन्त भी वहाँ रहने लगे होंगे, परन्तु वे सिद्ध योगी थे।[४]

इसी प्रकार चतुर्भुज मन्दिर के विक्रम संवत् ९३२-३३ के शिलालेख में भी इस दुर्ग का उल्लेख मिलता है। यह शिलालेख कन्नौज के राजा भोज देव के समय का है जो इस दुर्ग का शासक रहा था।

दुर्ग के बारे में प्रचलित किंबदंती यह है कि इस पहाड़ी पर ग्वालिय नाम साधु रहते थे। एक दिन नगर के नरेश सूर्यसेन, जिन्हें कुष्ठ रोग हो गया था, घूमते हुए इस पहाड़ी पर आ निकले और उनकी साधु से भेंट हो गई। नरेश ने प्रणाम करके अपने कुष्ठ रोग का उपचार पूछा। साधु ने राजा से वहाँ बने

---

३. मध्य प्रदेश के तीर्थ क्षेत्र—बलभद्र।

४. लेख गौपाद्रौ देवपत्तने डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी।

हुए तालाब में स्नान करने का परामर्श दिया। राजा ने वैसा ही किया और स्नान करते ही उनका कुष्ठ रोग जाता रहा। राजा ने उस साधु की इच्छानुसार उस पहाड़ी पर एक दुर्ग बनवाया और उसका नाम 'ग्वालिगढ़' रखा और बाद में नगर का नाम भी ग्वालियर रख दिया।

'मध्य प्रदेश के तीर्थ क्षेत्र' नामक पुस्तक में जहाँ सिहौनिया क्षेत्र का वर्णन आया है वहाँ बताया गया है कि— "सिहौनिया[५] नगर की स्थापना ग्वालियर के संस्थापक राजा सूरजसेन के पूर्वजों ने दो हजार वर्ष पूर्व की थी। राजा सूरजसेन को कुष्ठ रोग हो गया जो ग्वालियर किले में स्थित कुण्ड के जल में स्नान करने से दूर हो गया।" इससे ज्ञात होता है कि सूर्यसेन सिंहौनिया के राजा थे। इसी पुस्तक में आगे लिखा है राजा सूर्यसेन की जैन धर्म में प्रगाढ़ श्रद्धा थी उसकी रानी कोकनवती भी जैन धर्म की अनुयायी थी। उसने सन् २७५ में कोकनपुर मठ का जैन मन्दिर बनवाया था। यह मन्दिर ग्वालियर के किले में विद्यमान है।[६]

यह कथानक (किंवदंती) इतिहासकारों, आख्यानों, लेखकों एवं कवियों का आधार है जिन्होंने अपनी-अपनी शैली में दुर्ग के निर्माण एवं प्राचीनता के बारे में लिखा है।

श्रीमंत बलवंतराव भैया साहब सिंधिया ने "History of Fortress of Gwalior" (अंग्रेजी) जो फारसी के 'ग्वालियर नामा' का अनुवाद है, उसमें लिखा है कि ग्वालियर किले के पूर्व में सिंहौनिया नामक एक गाँव है जो दुर्ग से १२ मील के फासले पर है। वहाँ का जागीरदार कछवाहा ठाकुर सूरजसेन ईसा के बाद २७५ ई. में था।

---

५. सिंहौनिया का प्राचीन नाम कुंतलपुर था। खड्गराय ने गोपाचल आख्यान में कुंतलपुरी का वर्णन किया है उसमें बताया है कि कुंतलपुर राज्य १२ मील तक था। इससे ऐसा भाषित होता है कि कभी कुंतलपुर की सीमा में गोपाचल दुर्ग वाला पहाड़ था।

७. भारत वर्ष के दि. जैन तीर्थक्षेत्र-भाग ३ बलभद्र।

उपरोक्त समस्त लेखकों का आधार ग्वालिय साधु ही है जिसके कारण यह ग्वालियर गालव ऋषि की पुण्य भूमि कहा जाता है। परन्तु जैसा कि हम दूसरे अध्याय में लिख चुके हैं कि हरिहर निवास द्विवेदी ने "साप्ताहिक गोपाचल हेरल्ड" १५ जून १९८५ के लेख में यह बताया है कि ग्वालियर का रंच का मात्र भी संबंध गालव से नहीं हैं। इस प्रकार ग्वालियर दुर्ग निर्माण एवं उसकी प्राचीनता इतिहास के गर्भ में छिपी हुई है।

इस स्थल पर हम हरिहर निवास द्विवेदी के शब्दों को दुहराना आवश्यक समझते हैं जो उन्होंने अपने लेख "गोपाद्रौ देवपत्तने" में लिखे हैं। इससे इस पुस्तक के आशय को समझने में आसानी होगी।[७] उन्होंने लिखा है— "तोमरों के इतिहास की सामग्री की खोज करते समय मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि अब तक हम जिस सामग्री को इतिहास निर्माण का प्रमुख आधार मान कर चले हैं, वह बहुत प्रामाणिक नहीं है। इस क्रम में यह धारणा भी पुष्ट हुई है कि समकालीन जैन साहित्य में ऐसी एतिह्य सामग्री प्राप्त होती है जिसके आधार पर मध्य युग के इतिहास की खोई कड़ियों को जोड़ा जा सकता है और कुछ भूलों को सुधारा जा सकता है। यदि ये जैन ग्रन्थ उस समय उपलब्ध हो जाते, जब भारत का इतिहास लिखे जाने का प्रारंभिक कार्य किया जा रहा था, तब हमारी अनेक पीढ़ियां अशुद्ध इतिहास पढ़ने से बच जाती। अब यह अशुद्धि हमारे मस्तिष्क पटल पर इतनी गहरी खचित हो गई है कि उसे मिटाने में बहुत समय लग सकता है।"

'ग्वालियर किले का इतिहास पुस्तक' History of Fortres of Gwalior के अनुसार इस किले पर विभिन्न राजवंशों का अधिकार रहा है—

पालवंश : सूरजपाल (सूर्यसेन) ने ३६ वर्ष राज्य किया। इसका वंश पाल वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस पाल वंश का राज्य ९८९ वर्ष रहा।

परिहार वंश : पाल वंश के अंतिम राजा बुद्धपाल ने अपना नाम तेजकरन रखा। इसके भानजे (बहिन के लड़के) रामदेव ने धोखे से ग्वालियर राज्य हथिया लिया तभी से परिहार वंश का शासन चला जो १०२ वर्ष तक रहा।

---

७. महावीर निर्माण स्मृति ग्रन्थ-प्रकाशक जीवाजी विश्व विद्यालय, ग्वालियर।

प्रतिहार वंश : चतुर्भुज मन्दिर के शिलालेख वि. सं. ९३२-३३ से पता चलता है कि प्रतिहार राजा भोज ने उसे जीतकर कन्नौज राज्य में मिला लिया।

कच्छप घाट वंश : विक्रम की ११वीं शताब्दी से कच्छप घाट वंशी वज्रनामन नामक नरेश (वि. सं. १००७-१०३७ राज्य शासन) ने ग्वालियर जीतकर अपने अधिकार में कर लिया।

प्रतिहार वंश का पुनः शासन : प्रतिहार वंश की दूसरी शाखा ने इस पर पुनः अपना अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् यह किला सुल्तान शमशुद्दीन अल्तमश के हाथों में पहुँच गया। यह कुतुबुद्दीन का एक दास था।

तोमर वंश : वि. सं. १४५५ में तोमर वंश का राज्य हुआ जो वि. सं. १५९३ तक रहा।

लोदी वंश : तोमर वंश के राजा मानसिंह ने दिल्ली दरबार के सुल्तान सिकन्दर लोदी की अधीनता स्वीकार कर ली। राजा मानसिंह के पश्चात् उसका लड़का विक्रम जीत गद्दी पर बैठा। उसे दिल्ली दरबार में बुलाया गया परन्तु उसके न जाने पर शाही दरबार के आजम हुमायूं ने ग्वालियर पर हमला किया। विक्रमजीत को शमशाबाद का परगना दे दिया गया। आजम हुमायूं को ग्वालियर का शासक नियुक्त किया गया। इस प्रकार ग्वालियर किले से तोमर वंश का १०५ वर्ष का शासन समाप्त हुआ। यह मध्यकाल का अन्तिम हिन्दू राजा था।

मुगल वंश : बाबर के सेनापति रहीम दादू खाँ ने सन् १५५७ में लोदी वंश के सूबेदार तातार खाँ को पराजित कर ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। बाबर ने ही जैन मूर्तियों को खंडित किया था।

शेरशाह सूरी : हुमायूँ के फारस पलायन के पश्चात् शेरशाह सूरी ने ग्वालियर दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया।

अकबर : हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् अकबर गद्दी पर बैठा। उसने ग्वालियर को अपने अधीन कर लिया। अकबर से लेकर उसके वंशज मोहम्मदशाह तक मुगल साम्राज्य रहा।

मराठों का अधिकार : मुगल शासन के पश्चात् किले पर मराठों का अधिकार हो गया परन्तु इस काल में किले पर अधिकार के लिए बहुत

झगड़े होते रहे अन्त में सर ह्यूज रोज ने ग्वालियर पर धावा बोला और सन् १८८६ में किला जयाजीराव सिंधिया के सिपुर्द कर दिया। ३० जून १८८६ को जयाजीराव का देहान्त हो गया उसके बाद उनके पुत्र माधवराव गद्दी पर बैठे। परन्तु इस समय उनकी आयु १० वर्ष की थी अतः ब्रिटिश सरकार ने एक कौंसिलकी की नियुक्ति की। १५ दिसम्बर १८९४ में माधवराव ने कार्यभार संभाला। उनकी मृत्यु के पश्चात् जीवाजीराव गद्दी पर बैठे इस प्रकार ब्रिटिश सरकार और सिंधिया वंश ग्वालियर का शासन चलाते रहे।

मध्यभारत : १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। रियासतों का विलिनीकरण हुआ। २८ मई १९४८ को बाईस देशी राज्यों की सीमायें एक राज्य में संघबद्ध कर ग्वालियर, इन्दौर तथा मालवा संयुक्त राज्य (मध्य भारत) घोषित किया (जिसका उद्‌घाटन श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया) इस समय यह व्यवस्था की गई कि मध्यभारत की राजधानी ६ माह तक ग्वालियर और ६ माह इन्दौर रहेगी।

मध्यप्रदेश : गणराज्य की स्थापना के पश्चात् प्रदेशों का पुनर्गठन किया गया। ३० नवम्बर १९५६ को मध्यप्रदेश का निर्माण हुआ। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में यह सबसे बड़ा प्रदेश है। अब ग्वालियर केवल एक जिला मात्र है जिसमें ग्वालियर, डबरा और भाण्डेर तीन तहसीलें हैं।

यहाँ एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि ग्वालियर किले के निर्माण के सम्बन्ध में यह धारणा है कि किले का निर्माण तीसरी सदी में हुआ स्पष्टतः सन्देहास्पद है। ग्वालियर किले का इतिहास (History of Fortress of Gwalior) पुस्तक में जो राजवंशों का विवरण है उसके अनुसार कच्छपघाट वंश के वज्रनामन ने ग्वालियर का किला विजय किया। इसका शासन काल विक्रम संवत् १००७ से १०३७ तक रहा। इसके पूर्व-प्रतिहार वंश, परिहार वंश और पाल वंश का शासन १०२ वर्ष का। इस गणना से ग्वालियर किले का निर्माण काल विक्रम संवत् के पूर्व का ठहरता है। परन्तु इसी इतिहास में यह लिखा गया है कि सिंहौनिया का जागीरदार कछवाहा ठाकुर सूरजसेन ईसा के बाद २७५ ई. में था इसमें विसंगति मालूम होती है।

अतः यह स्पष्ट है कि किले के निर्माण एवं प्राचीनता के सम्बन्ध में कोई समय निश्चित करना कठिन है।

वैर का विपाक

जरा और मृत्यु से प्राणी मात्र परिचित हैं। नित्य के और पल पल के परिचित होते हुए भी मृत्यु और वृद्धत्व और इन दोनों की सहचरी व्याधि अकस्मात् रूप धरकर सामने आकर जब खड़ी हो जाती हैं, तब ये तीनों ही कितने परस्पर अनजान, अप्रिय और अस्पृश्य दिखते हैं? मृत्यु के साक्षात् दर्शन ने अनेक चिंतकों और धर्म-प्रवर्तकों की आंखें खोल दी हैं। नचिकेता ने जब पहले पहल मृत्यु को देखा तब उसे इतना अधिक कुतूहल हुआ था और इतनी उत्सुकता-जिज्ञासा उसमें जागी कि वह मृत्यु का रहस्य जानने को मृत्यु के पीछे पीछे ठेठ धर्मलोक तक गया था ऐसी एक पौराणिक कथा भी है। मैं अमृत कैसे बनूं? मैं जन्म-जरा और मृत्यु को भी किस प्रकार पराजित करूं? इसकी खोज में उसने घोर तप और अभ्यास किया। मृत्युंजय का मंत्र भी प्राप्त किया। परन्तु मृत्यु की नित्य होनेवाली लीलाओं में जरा भी अन्तर नहीं आया।

अच्छे संस्कार स्वामी और मृत्यु विजयी महानुभावों को भी प्रथम प्रेरणा मृत्यु के प्रथम साक्षात ने ही दी। मृत्यु क्या वस्तु है? मृत्यु का स्वरूप समझने का प्रयत्न करनेवाले इन गवेषकों ने जो विराग का, आत्मशुद्धि का और निर्भयता का संदेशा दिया, विश्वोद्धार के लिए जो राजमार्ग दिखाया, उसके स्पष्ट अवशेष आज भी शास्त्रों में मिल रहे हैं।

वसंतोत्सव मनाने को रथ में बैठकर निकला हुआ उज्जयिनी का राजकुमार समरादित्य भी जरा और मृत्यु की सहचरी जैसी व्याधि को मूर्तिमान देख, ऊंघ में से चमक कर जागता हो ऐसा सहसा चमका। उसकी दृष्टि तोरणों-पताकाओं को भेद कर मार्ग के दूरातिदूर एक सिरे पर पड़ी। नागरिकों द्वारा शहर-सजावट देखना त्याग समरादित्य के नेत्र वहां दूर ही दूर क्या देख रहे होंगे? कुमार के मुख पर छाया गहरे बादलों जैसे खिन्नताभरा औदासिन्य देख कुछ भी समझ नहीं पा रहे थे कि कुमार इतना अधिक किस उलझन में फंसा है?

सारथी! रथ किंचित उस ओर को लो तो।

महाराज! मैं उद्यान की ओर ही रथ हांक रहा हूँ। सारथी कुमार का आशय ऐसा कह कुमार ने रथ को दूसरी ही ओर मुड़ा दिया। फिर रथ से उतर पास जाकर जो देखा तो जीवित होते हुए भी मृत समान, व्याधियों से घिरा हुआ एक पुरुष अंतिम श्वास लेता पड़ा था। उसका सारा शरीर मानों निचुड़ ही गया था। मुख पर बड़े बड़े फोड़े या ददोड़े जैसे लाल लाल चट्टे पड़े थे, उसका नाक बिलकुल ही खिर चुका था। मक्खियां चारों ओर भनभना रही थीं।

कुमार को अधिक निकट जाते देख एक साथी कह उठाः कुमार, निकट न जाइए। यह कोढ़ रोग से मरने को पड़ा हुआ है। कोढ़ के रोग के जंतुओं से कुमार को बचाने का ही इस साथी का उद्देश्य था। परन्तु समरादित्य कुमार उसका वह भाव नहीं समझा।

इसकी ऐसा दशा किसने की? कुमार ने एक छोटे निर्दोष बालक के जैसे पूछा कि ऐसी दशा करनेवाले अपराधी को दंड देने को उनका हाथ सहज ही तलवार की मूंठ पर गिरा। पिताजी ऐसे घोर अपराधियों को दंड क्यों नहीं देते? व्याधि नाम का कोई अत्याचारी हो और पिताजी को एक राजा के रूप में उसे दंड देना ही चाहिए ऐसा मानने वाले भोला राजकुमार धीरे से बोला।

साथी ने तब कहना शुरू किया : व्याधि, इस दुनिया की कोई व्यक्ति नहीं है। व्याधि के वशीभूत तो सब कोई को होना पड़ता है। इसमें हम सब निरूपाय हैं। चलिए उद्यान में। व्यर्थ ही विलम्ब करने से क्या लाभ?

व्याधि के संबंध में विचार करते हुए कुमार अपने आसपास खड़े साथी समूह का मान ही भूल गए। न जाने कितनी ही देर तक पत्थर की मूर्ति जैसे हुए वे इस प्राणहारक व्याधि के पंजे में फंसे उस पुरुष को देखते रहे। कुछ ही पूर्व उल्लास से चमकते समरादित्य के सुकुमार मुख पर मानों किसी ने स्याही पोत दी हो ऐसा बेचैन वह दिखने लगा।

वसंतोत्सव बंद करा देने का उसका मन हुआ। परन्तु पिताजी की आज्ञा की अवगणना होगी, हजारों नागरिक निश्वास फैंकेंगे, ऐसी चिन्ता से समरादित्य रोगी के पास से हटकर रथ में आ बैठो।

कुछ ही देर के पश्चात् एक वृद्ध दंपति, मार्ग में एक किनारे पर बैठे दिखे। दोनों के हाथ पैर धुज रहे थे, दांत गिर चुके थे, आंखों की ज्योति भी जा चुकी थी। बेटे-बेटी थे परन्तु उन सबने इस बूढ़ा-बूढ़ी को घर से निकाल दिया था।

ये लोग शीत से धुज रहे हों ऐसा कुमार को लगा। घर में रहने के एवज मार्ग पर ये क्यों बैठे हैं? समरादित्य ने सारथी से पूछा।

सारथी और कुमार के साथी लोग ऐसे प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें लगा कि आज ही और इतने अधिक ऐसे अपशकुन कहां से आ टपके? उनका वश चले तो नगर के प्रत्येक रोगी और प्रत्येक वृद्ध को वे बाहर निकाल दें।

परन्तु उत्तर दिए बिना चल ही नहीं सकता था। अतः सारथी बोलाः महाराज! इसी का नाम बुढ़ापा है। सारी जिंदगी खूब परिश्रम किया, परन्तु बुढ़ापा आया। हाथ-पैर चलने बंद हुए नहीं कि संतान ने उन्हें निकम्मा मान घर से बाहर धकेल दिया है।

कुष्ट रोग से दुःखित, मनुष्य को तो लोगों ने मार्ग में फेंक दिया था। परन्तु वृद्धों की भी ऐसी दशा होती है, व्याधि की भांति वृद्धत्व भी प्राणीमात्र का रक्तमांस शोषण कर लेता है यह देखकर कुमार का मन बहुत अधिक द्रवित हो गया।

वृद्धत्व के वशीभूत ये लोग क्यों होते होंगे? कुमार की इस बालोचित जिज्ञासा का सारथी क्या उत्तर देवे? उसने इतना ही कहाः यह कोई हमारे हाथ की बात नहीं है। देर-सवेर वृद्धत्व तो आएगा ही।

व्याधि की भांति वृद्धत्व भी अनिवार्य है, ऐसा कुमार को विश्वास हो गया। विश्व के इन सनातन वैरियों का सामना करने का मानव समाज के पास क्या कोई भी उपाय नहीं है? मनुष्य इतना शक्तिशाली और बुद्धिशाली होते हुए भी इतना पामर है? इतना निरूपाय है? वसंतोत्सव के पीछे पागल बने हुए हजारों स्त्री-पुरुषों में से किसी को क्यों इस व्याधि-वृद्धत्व के संबंध में अंशमात्र भी चिंता नहीं लगती है? मेरा अकेले का ही चित्त क्यों इस विभ्रम के चक्र में जा पड़ा है?

सारथी को कुमार से भी अधिक उतावली थी। महाराजा ने रास्ते में कहीं भी रथ नहीं रोकने को, कुत्सित दृश्य कुमार को नहीं दीख जाएं इसलिए, सावधान कर दिया था। किसी दिन नहीं फिर आज ही एक के बाद एक अमंगल दृश्य आ आकर आंखों से टकरा रहे थे इससे सारथी की चिंता बहुत अधिक हो गई थी।

वसन्तोत्सव के विरल वैभव से गर्जते उद्यान के पास ही कुमार का रथ अब आ पहुँचा था। और सारथी जैसे ही मुक्ति की अंतिम सांस ले रहा था कि समरादित्य बोलाः सारथी! रथ रोको! वहां समस्वर के करुणाजनक आक्रंद करते कौन जा रहे है? उद्यान के एक ओर जाती छोटी सी टुकड़ी की ओर कुमार ने विव्हलभाव से अंगुली निर्देश किया। सारथी ने भी वह दृश्य देखा था, परन्तु कुमार की दृष्टि उस ओर आकृष्ट हो उस पूर्व ही वह उद्यान के नृत्य-गीत के उत्ताल रससागर में कुमार को स्नान कराने की धारणा कर रहा था। कुमार की चकोर दृष्टि उस ओर गई देखकर सारथी हताश हो गया। कुमार की आज्ञा से उसे रथ रोकना ही पड़ा।

यहाँ नहीं, रथ को वहां ले चलो जहाँ सगे-संबंधी शव को उठाकर ले जा रहे थे। उस दिशा में रथ हांकने को कुमार ने सारथी से कहा।

समरादित्य ने ठीक निकट में खड़े रहकर देखा कि किसी गरीब मनुष्य का शव, जीर्ण बल्लियों-जीर्ण बांसों पर बांधकर और ऊपर एक जूना-पुराना वस्त्र ढ़ककर उसके दीन सगे-संबंधी रोते कलपते चले जा रहे थे। पुरुषों से कुछ ही दूर परन्तु पीछे पीछे स्त्रियाँ हृदयविदारक कल्पांत करती जा रही थी।

कुमार ने इस जन्म में मृत्यु का स्वरूप पहले पहल ही देखा था और इसी समय उनकी दृष्टि के सामने जो सुनहली-रंगबिरंगी परदे झूल रहे थे, वे दूर हो गए। मृत्यु मनुष्य मात्र की ऐसी दुर्दशा करती है? इसकी सब शक्ति-ओजस वह हरण कर लेती है? पीछे रहने वाले सगे-स्नेही इतने हताश-निरूपाय-असहाय बन मात्र कल्पांत करते ही रह जाते हैं? मृत्यु जैसा महाप्रबल शत्रु मनुष्य के सिर पर अहोनिशं पीछे ही लगा है, फिर भी ये ही मनुष्य आनन्द, प्रमोद और शृंगार लीला में इतने बेसमझ कैसे बन जाते हैं?

सारथी ने समरादित्य को सचेत नहीं किया होता तो वह न जाने कब तक दिग्मूढ़ हुआ उसी प्रकार रथ में बैठा रहता। यह अंतिम दृश्य देखने के पश्चात् समरादित्य को एकांत में जाकर बैठने का मन हुआ। उत्सव का उल्लास तो उसे मूलतः था ही नहीं। परन्तु पिता को बुरा लगेगा, उनका दिल दुखेगा यही सोचकर केवल व्याधि, वृद्धत्व और मृत्यु के ही विचार करते हुए उसने उद्यान में प्रवेश किया।

लोगों ने तुमुल हर्षध्वनियों से उसका स्वागत किया। फिर भी उनके आनन्द-विनोद में भाग लेने जैसी कुमार में शक्ति ही नहीं शेष रह गई थी।

पास ही खड़े एक दो नागरिकों को उसने पूछाः 'संसार में सच्चा साम्राज्य तो व्याधि और मृत्यु ही का चल रहा है, क्या यह बात तुम जानते हो?' वसंतोत्सव जैसे प्रसंग में कुमार इस प्रकार कैसे बोल पाया यह बात नागरिक समझ हीं नहीं सके। उन्हें लगा कि कुमार का दिमाग बिगड़ गया लगता है। अन्यथा अवसरविहीन बात कुमार मुंह से निकालेगा ही क्यों?

सगे-संबंधियों का मृत्यु समय का आक्रंद अभी भी कुमार के अंतर को उद्वेलित कर रहा था। दूसरी ओर वसंतोत्सव में उन्मत बने हुए युवक युवती के मधुर संगीत और आलापना की ध्वनि भी कुमार के कानों से टकरा रही थी। दोनों में सत्य क्या? वह दुःख या यह आमोद।

कुमार के मुख पर व्यथा और विव्हलता छाई देख वसंतोत्सव मनाने आए रसिकों का रंग उड़ गया। उन्हें लगा कि जिस उत्सव में मुख्य नायक स्वयम् ही मुख कुसुणा कर आए वह उत्सव ही किस काम का? वस्तुतः तो कुमार को ही उमंग रंग में चकचूर हो प्रेक्षकों का उत्साह बढ़ाना चाहिए था। जीवन में ऐसे अवसर दुर्लभ हैं ऐसा मानकर उनका उपभोग करने को कटिबद्ध होना चाहिए। ऐसा नहीं करके रोता-शोकग्रस्त मुंह बनाए कोई आए तो उसके गर्म निश्वासों से उद्यान के शीतल कुंजों में भी दावानल भड़क जाए।

और हुआ भी वस्तुतः ऐसा ही। समरादित्य कुमार के अंतर में विराग की जो अच्छी चिनगारी प्रगट हो चुकी थी उसने इस वसंतोत्सव के प्रेमियों और उपासकों को दग्ध कर दिया। व्याधि और मृत्यु के अत्यन्त परिचित होते हुए भी उन्हें निर्माल्य वस्तु माननेवालों को कुमार ने चिंताग्रस्त कर दिया। मनुष्य

मृत्यु और व्याधि के सामने पामर है फिर भी मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की मनुष्य में शक्ति ह, प्रमादवश और मोहवश वह यह शक्ति खो बैठा है इस बात का कुमार ने उन्हें स्मरण करा दिया। परन्तु लोगों को लगा कि यह स्मरण अस्थायी और असमयी था।

समरादित्य जैसा संस्कारी युवक संसारियों को कदाचित नहीं समझ में आए। जरा, व्याधि और मृत्यु जैसी प्रति दिन की सामान्य ही नहीं अपितु अति सामान्य घटमाला के पीछे रक्त-खौलानेवाली, संक्षुब्ध बनानेवाली मनुष्य उसे कदाचित् मूर्ख जैसा भी लगे। परन्तु ऐसी चिंता और व्यथा की चिंगारी कोई पुण्यशाली अथवा भाग्यवान के अंतर में ही प्रगट होती है। चिंतन और संवेदन की यह अदृश्य आग संस्कारी को जिस प्रकार तपाती है, वैसे ही वह शुद्ध भी करती है।

समरादित्य को इसमें से नया सीखने का कुछ भी नहीं था। मात्र पूर्व के संस्कारों को जागृत ही करना था। व्याधि और मृत्यु के दृश्यों ने उसकी आँखों में अलौकिक अंजन आँज दिया था और उसे संसार के प्रति देखने की–वस्तु मात्र के अवलोकन की शुद्ध निर्मल दृष्टि इस निमित्त से मिल गई थी।

समरादित्य के पिता पुरुषसिंह के कुमार को वसंतोत्सव प्रयाण की, और मार्ग में अकस्मात् बनी घटनाओं की सूचना मिली तो भूख और तृष्णा सब ही चली गई। उज्जयिनी का युवराज ऐसा भीरू और वैरागी हो यह बात पहले तो उनके मन में ही नहीं आई। पर वस्तु स्थिति कहां तक छुपी रहती?

पुरुषसिंह ने सोचा कि युवराज समरादित्य अभी अज्ञान और अनुभवहीन है। इसका हृदय अभी संसार के रंग से रंगा नहीं है। कुछ विनोद, विलास और रतिक्रीड़ा में नहाएगा तो वह भी हम सब जैसा ही रंगीला बन जाएगा। बस समरादित्य को संसारी दीक्षा देने को कितने ही सामंतपुत्रों को सहचर रूप से कुमार के आसपास उन्होंने लगा दिया।

जिनका जीवन का कोई उच्च हेतु नहीं, मात्र रसास्वाद और विलास सिवा, अंतरजगत के आघात-प्रत्याघात के साथ जिसका कोई लेना देना नहीं, ऐसे युवकों ने कुमार को अपने जाल में फंसाने के अनेक प्रयत्न किए। परन्तु

योगियों की जमात में से कारण वशात् पृथक हुए इस समरादित्य पर उनका एक भी जादू कारगर नहीं हुआ। जिसको वे अपनी रंगभरी छटा से मोहने को गए थे, वे ही उसकी पवित्र-कत्याणपक्षी विराग की बातों से अभिभूत हो गए। उन्हें भी इतना विश्वास हो चुका कि यह कुमार सामान्य मनुष्य नहीं है अपितु पूर्व जन्म का कोई ऋषिकुमार है।

पुरुषसिंह का यह दाव इस प्रकार अकारथ हुआ। अंत में उसने विचारा कि पागल हाथी जैसे पुरुष को नाथना हो तो लग्नग्रंथी जैसे अन्य कोई भी अमोध उपाय नहीं है। कुमार के लिए कन्याओं को खोजने जाना पड़े ऐसा नहीं था। पुरुषसिंह के साले की दो कुमारिका पुत्रियाँ उत्यन्त उपयुक्त पात्र थी और दोनों ही कुमारिकाएं रूप-गुण में परस्पर संपूरक जैसी होने से यह संबंध स्थिर कर देने और शीघ्रातिशीघ्र इस प्रसंग का निर्णय कर देने का पुरुषसिंह ने निश्चय किया। मामा की पुत्रियों के लग्नसंबंध बांधना क्षत्रियों में अविधियुक्त नहीं है इसलिए इस विषय में भी किसी की सम्मति लेने का नहीं था। कुमारिकाओं के पिता खड़गसेन तो चाहता ही था।

मात्र समरादित्य की सम्मति कैसे प्राप्त की जाए यही एक विषम समस्या सामने थी और पुरुषसिंह ने यह उत्तरायित्व स्वयम् ही अपने ऊपर ले लिया। उसने एक दिन समरादित्य को बुलाकर पूछा: खड़गसेन की दोनों पुत्रियों के साथ तुम्हारा लग्न-संबंध करने का मैंने प्रबंध कर रखा है। दोनों कुमारिकाओं के विषय में मैंने पूरी पूरी देखभाल और खोज कर ली है। मुझे विश्वास है कि तुम मुझको निराश नहीं करोगे।

ऐसी बातों में समरादित्य अधीरा अथवा उच्छ्रखल नहीं था। निश्चय ही उसने अपनी एक आध्यात्मिक दृष्टि रच रखी थी और वहीं उसका मन शांति से विराम पाता था। फिर भी वह अपने आप्तजनों की सुकुमार भावनाओं को दुखाना नहीं चाहता था। विराग उपशम और शांति से वह जैसे छलाछल था वैसे ही विनय और नम्रता का भी मीठा समुद्र जैसा था। विनय, विवेक और सहानुभूति न हो तो धर्मवृक्ष पनप ही नहीं सकता है यह वह मानता था। अत: पिता के प्रस्ताव में अपना कोई रस नहीं होते हुए भी उसने अपनी सम्मत्ति दे दी।

पुरुषसिंह की आंखों के सामने सोने का सूरज ही झलझला उठा। उसने युवराज के लग्नोत्सव की बन सके उतनी शीघ्रता से और शानदार तैयारियाँ करने की मंत्रियों, अमात्यों सामंतों आदि को आज्ञा दे दी।

उज्जयिनी ने थोड़े दिनों के लिए तो अमरावती की शोभा को भी लजा दिया। नगर में स्थान-स्थान पर उत्सवों का आनन्द उछल रहा था। लग्न के आमोद-उत्सव प्रवाह में एक मात्र समरादित्य-युवराज वरराज ही उदासीन रहता होगा, ऐसा लगता है पहले तो वह स्वयम् सब प्रकार के स्नेह बंधनों से मुक्त होना चाहता था, मोह-ममता और रागद्वेष की शृंखलाओं को वह तोड़ना चाह रहा था। पर अब उसमें लग्नबंधन की एक और बेड़ी पड़ रही थी। और यह उसको नहीं रचना स्वाभाविक ही था। परन्तु उसके साथ माता-पिता के आनन्द में वह भी भागीदार है इस विचार से उसे तृप्ति मिल रही थी। फिर उसे अपने सामर्थ्य के संबंध में भी पूरी पूरी श्रद्धा थी। बंधन मात्र, यदि उसे आंतरिक आकर्षण न हो तो, दूसरे ही क्षण कच्चे सूत के तंतुओं की भांति टूट जाए। अतः एक नया बंधन बढ़ जाने पर भी समरादित्य के मुख पर इस लग्न के निमित्त से खिन्नता जैसी कुछ भी नहीं देखी जाती थी।

पुरुषसिंह ने इस लग्नोत्सव के प्रसंग में याचकों के यथाशक्ति दान दिए जाने की और वह भी कुमार के हाथों से ही दान दिलाने की योजना बना दी थी। इसमें कुमार को सब से अधिक आनन्द और परितृप्ति मिलती थी। जो परिग्रह एक दिन त्यागा जाने का ही है। वह यदि इस प्रकार दीन-दरिद्रियों के दुःख निवारण से उपयोगी होता हो तो समरादित्य ऐसे एक दो ही नहीं अपितु पाँच-पचीस लग्न करने को तैयार था।

अंत में लग्न का दिन भी आ गया। सजाए हुए और जनरव से गूंजते मंडप में स्वयंवरा जैसी दोनों कन्याओं को देखते ही समरादित्य को हुआ कि इन दोनों कन्याओं के मुख पर जो प्रसन्नता और निर्दोषता दिखती है उससे ये दोनों भव्यात्मा है और ये दोनों उसी के मार्ग का अनुसरण करेंगी इस विषय में भी उसे रंच मात्र भी संदेह नहीं रहा।

कुमार ने यथाविधि विप्रवती और कामलता का पाणिग्रहण किया। दोनों वधुओं के साथ मातापिताओं को नमस्कार कर और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर वह अपने वासगृह को चला गया।

प्रारम्भ में तो लज्जा और संकोच ने समरादित्य की जिव्हा को जकड़ रखा। दोनों नववधुओं से उसने अनेक बातें कह डालने का और अपना प्रस्ताव स्वीकृत कराने के मनोरथ को पूर्ण करने का सोचा। परन्तु प्रथम मिलन की पहली ही रात्रि में यह सब कैसे कहा जाए इसका समरादित्य निश्चय नहीं कर सका। कुमार के बराबर सामने ही बैठी कुंदलता ने पहले मौन भंग किया। उसने एक हाथ में अतिमुक्तक पुष्पों की माला लिए हुए कुमार के निकट जाकर कहा :

यह माला आपकी प्रियाओं ने ही गूंथी है और पूर्ण अनुराग से आपके कंठ में अर्पण करने की मुझे अनुमति दी है।

समरादित्य ने सहज झुककर उस पुष्पमाला को स्वीकार किया। कुंदलता के साथ मानिनी नामा एक दूसरी सहचरी भी थी और इन दोनों सहचारियों के पीछे समरादित्य की दोनों ही नववधुएं सकुचाई हुई बैठी थीं।

पर कुंदलता तेरी इन दोनों बहनों को मेरे पर अकस्मात इतना अनुराग कैसे हुआ; यह मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया है। समरादित्य ने चर्चा का प्रारम्भ करने के लिए सरल स्वभाव से कहा।

सखियों अथवा नवपरिणिताएं दोनों ही ऐसे प्रश्न के लिए जरा भी तैयार नहीं थीं। कुंदलता किंचित चकोर थी। वह समरादित्य को उद्देश्य कर उसकी प्रचार प्राप्त ख्याति की बात कहती ही थी और भिन्न भिन्न देशों में से आने वाले यांत्रिक, राज्याश्रित और भाट चारण के मुखों से सुनी बातों से अनुराग बंधा ऐसा कहने की अभी शुरुआत ही कर रही थी कि पीछे से किसी ने उसे मना कर दिया। इस टोकने का अर्थ यही था कि चुप रहो। यहाँ अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है।

अपनी जिज्ञासा का कुछ उत्तर नहीं मिला। सखियों और वधुओं को विचार-मग्न देखकर कुमार स्वयं कहने लगे:

अनुराग चाहे जिस रीति से हुआ हो, इसकी गहराई में उतरने की इस समय आवश्यकता नहीं है। परन्तु मैं तुम्हें इतना कह देना चाहता हूँ कि जिस अनुराग से किसी का अहित होता हो तो वह अनुराग किस काम का?

विवाह के समय कोई बरसी की बात करता हो ऐसा दोनों बहनों को लगा। लग्न के और प्रथम मिलन के प्रसंग में यह वार्तालाप किसी भी प्रकार संगत नहीं था। जिस समय में सहचरियों ने और नववधुओं ने रस-विनोद की अथवा हास्यालाप की आशा रखी थी, वहाँ साधु-संयासी मंडली को शोभे ऐसी बात निकलते सुन नंदनवन की चोटी से नीचे धकेल दी गई हों ऐसा आघात वे अनुभव कर रही थी।

सूखे-नीरस वातावरण में विप्रवती अकुलाती हो उस प्रकार बोल उठी: अनुराग के साथ अहित का क्या संबंध है?

अनुराग अर्थात् मृगजल। तृषित मृग इस मृगजल के पीछे दौड़ता रहकर अपने प्राण कैसे खो देता है उसकी कल्पना आदि करोगी तो अनुराग और अहित एक ही सूत्र में पिरोए हैं यह बात तुमको समझ में आ जाएगी।

कामलता बीच में ही बोल उठी: मृग और मनुष्य में क्या कुछ अंतर नहीं है?

सहचारियों के मुख पर स्पष्ट ही स्मित रम रहा था। कुमार को कामलता ने ठीक ही पकड़ा ऐसा इन भोली बालाओं को लगा। वार्तालाप में भी कुछ उष्णता आई।

मृग मूरख है क्योंकि वह पशु है। परन्तु बुद्धिमान मनुष्य जब मूर्खता करता है तो उसकी सीमा ही नहीं रहती है। कुमार यहाँ उस व्याधि, वृद्धत्व और मृत्यु विषयक मानवसंघ की बेहयाई वर्णन करना चाहता था, परन्तु फिर उन्हें ऐसा लगा कि अभी बहुत गहरे पानी में उतरने के लिए जो अवतरणिका-भूमिका चाहिए वह तैयार नहीं हुई है।

परन्तु अनुराग हो वहां अहित भी हो इस बात को कोई संबंध सत्य ही है? कुमार! विप्रमवती ने अब पूरे बल से चर्चा के मैदान में पैर रखा।

कुमार भी उत्साहित होकर कहने लगा: कल्पना करो कि एक युवती राजकुमारी सोलह श्रृंगार सजे झरोखे में बैठी है। यौवन की उद्दाम आतुरता उसे बेचैन बना रही है। इतने ही में एक युवक झरोखे के नीचे से जाता है। युवती दासी को भेजकर उस युवक को अपने पास बुलाती है और कहती है: मुझे आपके प्रति अत्यन्त अनुराग हुआ है। मुझे कामदेव जैसे लगते हो। मेरा सर्वस्व मैं आपको अर्पण करती हूँ। युवक की आँखें मोह-मदिरा के

नशे में चकचूर हो जाती है। इतनें में ही युवती के निकटस्थ किसी स्वजन के पदचाप सुन पड़ते हैं। युवक सकपका जाता है। यही नहीं कारागार में डाल दिया जाता है। वहाँ उसकी दशा कैसी होगी? अनुराग ने युवक का कितना अहित किया? कहो तो देखे।

समरादित्य ने सारी बात इस ढंग से कही कि पकड़े जाने वाले कारागृह में पड़ने वाले युवक की दयाजनक स्थिति की कल्पना कर विप्रवती और कामलता अंतरंग में कांप उठी।

अनुराग ने अहित किया इतना ही नहीं अपितु यह भी कहा जा सकता है कि युवती देश-काल भी भूल गई थी। क्षणिक आवेग ने उसे अंधा बना दिया था। विप्रवती ने अपना निर्णय कह सुनाया।

कालमता ने कुछ भिन्न रही और बोली : पहले तो वह अनुराग ही नहीं था। मायावी मोहजाल था और दूसरे यह कि वह अपनी परवशता भूल गई थी।

कुमार ने कहा : तुम दोनों ही की बात सत्य है। हम भी कम परवश नहीं हैं। हम भी कषायों के वशीभूत हैं और हम भी अनेक मानव जन्म की दुर्लभता भूल जाते हैं।

इतना कहकर कुमार दोनों के मुंह के सामने देखते ही रहे। दीपमाला के चमकते तेज ने इन दोनों युवतियों के मुख पर तेज का अंबार मढ़ दिया था। फिर भी इस तेजोरात्रि के बीच में कुमार ने गाभीर्य और गौरव के दर्शन किए। उन्हें लगा कि वाणी का व्यय न तो व्यर्थ ही हुआ है और न अर्थशून्य ही।

इसके पश्चात् उन्होंने जरा, व्याधि और मृत्यु मानव-जाति के कितने पुराने वैरी हैं, सामर्थ्य के अतल सागर जैसा मनुष्य जन्म-जन्मांतर में भ्रमण करता कैसी बिडम्बनाएं भोगता है, और कषायों के उपशमन के लिये सच्चे वीर पुरुषों को तथा वीरांगनाओं को कैसी-कैसी साधना करनी चाहिए, कितने वैराग्य तथा विश्वप्रेम का अवलंबन लेना चाहिए यह सब ब्यौरेवार उन्हें बताया।

समरादित्य के प्रति अनुराग के वशीभूत हो दोनों नववधुओं ने यह बात ध्यानपूर्वक सुनी। रात्रि धीरे धीरे जमती जा रही थी। दूर से आती वीणा के शब्दों जैसी समरादित्य की वाग्धारा दोनों बहनों ने शांतिपूर्वक सुनी।

स्पर्शमणि जैसे स्पर्श मात्र से लोहे को सोना बना देता है वैसे ही समरादित्य के अंतर के विराग ने इन दोनों नववधुओं को विराग रंग में रंग दिया। समरादित्य के जैसी ही विप्रवती तथा कामलता को एक भिन्न ही दृष्टि झलकती मालूम दी। संस्कारी तो वे थी ही। समरादित्य ने ऐसे संस्कारित पट पर त्याग-संयम और सहिष्णुता का रंग खूब गहरा चढ़ा दिया। नववधुओं को उसने एक ही रात में अपनी शिष्याएं श्रद्धालु उपासिकाएं जैसी बना दिया।

दोनों नवपरिणिता नारियों को संयम में स्थिर करने के पश्चात् समरादित्य को लगा कि गृहत्याग का मार्ग अब लगभग निष्कंटक बन गया है। मात्र माता-पिता की अनुमति मिल जाए तो वह एक क्षण का विलंब किए बिना सिंहवृत्ति से सर्वस्व का त्यागकर विराग के राजमार्ग पर चल निकल सकेगा। अंतरंग तो रंगा ही जा चुका था, परन्तु जब तक माता-पिता अनुकूल नहीं बन जाएं, स्वयं ही त्याग जीवन में सम्मत न हो वहाँ तक शांति से राह देखते रहने के सिवा अन्य कोई उपाय ही नहीं है।

जिनके त्याग-विराग स्वयं और स्वाभाविक है उनका धैर्य और गांभीर्य भी अपरिसीम होता है। झटपट भाग जाने की इनकी वृत्ति ही नहीं होती है ऐसा तो कैसे कहा जाए? परन्तु वाह्य परिस्थिति इन्हें विलकुल ही उलझन में नहीं डाल देती हैं। उपसर्ग-दुःख-प्रति-कूलताओं को खुली छाती सामना करने का बोधपाठ वे इसी प्रकार पक्का करते हैं।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 8 TITTHAYARA November 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225